शास्त्रों में वर्णित महाकुंभ का साक्षात् दर्शन यहाँ...

कहा जाता है कि अगर हमको शांति की स्थापना करनी हो तो हमको शांति धारण करनी पड़ती है। शांति के सागर परमात्मा शिव निराकार के साथ असंख्य मास्टर शांति के सागर आत्मायें निरन्तर उन्हीं प्रकंपनों को पूरे विश्व में एक साथ, एक समय पर फैला रहे हैं। परमात्मा का ये पावन धाम माउण्ट आबू जहाँ पर साक्षात उस महाकुंभ को हम अनुभव कर सकते हैं जिसका वर्णन शास्त्रों में है और उसकी नींव 1936 में पड़ चुकी है, अब जल्द ही होगी वो स्वर्णिम दुनिया साकार। आप दर्शन नहीं करना चाहेंगे!

एक मान्यता प्रचलित है कि जब किसी चीज़ का विरोध होता है तभी परिवर्तन होता है। परंतु आज के समय में वो परिवर्तन सर्वमान्य व स्थायी नहीं माना जाता, क्योंकि उसे सहज भाव से लोगों ने स्वीकारा नहीं ने इसका बीड़ा उठाया है। सुनकर आपको आश्चर्य ज़रूर लग रहा होगा, लेकिन ये बात सम्पूर्ण रूप से सत्य है। अरावली की श्रृंखला में बसा एक पवित्र स्थान माउण्ट आबू, महापरिवर्तन के लिए एक अनुपम स्तर पर कर रहे हैं। यह परिवर्तन स्वैच्छिक है अर्थात् यहां कोई दबाव जबरदस्ती नहीं है। परमात्मा सबसे पहले सभी आत्माओं को उसके स्वयं का परिचय देते कि तुम एक सुंदर, शक्तिशाली, अविनाशी आत्मा

होता है। मदर टेरेसा भी उन रैलियों में नहीं जाती थीं जहाँ विरोध होता था। उनका कहना था कि यदि आप शांति स्थापन करना चाहते हैं तो उसे शांति से करें न कि विरोध से। इसी श्रृंखला में भारत भूमि पर बड़े सहज व शान्तिमय तरीके से महापरिवर्तन आरंभ हो चुका है। स्वयं परमात्मा उदाहरण बन चुका है। यहां पर स्वयं संकट हर्ता, सुख दाता, सर्व आत्माओं के पिता परमपिता शिव परमात्मा निराकार ज्योतिर्बिन्दु अपने साकार माध्यम पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित हो, ब्रह्मा वत्सों ब्रह्माकुमार व ब्रह्माकुमारियों के द्वारा महापरिवर्तन का कार्य युद्ध हो। परन्तु बहुत काल से इस अज्ञानता के कारण अपने आप को शरीर समझते हो लेकिन इसके कारण ही दुःख व अशांति का माहौल बना हुआ है। बस यही एक परिवर्तन है जो हमें उस स्वर्णिम संसार की तरफ ले जाएगा। जब सभी इस महापरिवर्तन में ये समझ लें कि 'मैं एक अविनाशी शांत आत्मा हूँ और मेरे अंदर मेरे अविनाशी सातों गुण मौजूद हैं, मैं सतोगुणी हूँ' बस यही हमें स्वर्णिम संसार की तरफ रुख करने में मदद करेगा।

यह कार्य करीब 9 दशकों से निरंतर जारी है। यहां पर देश-विदेश के बहुत सारे कर्णधारों ने परिवर्तन कर स्वर्णिम दुनिया में आने हेतु अपना पंजीकरण करा लिया है। महापरिवर्तन की इस पावन वेला में परमात्मा शिव आप सबका भी आह्वान कर रहे हैं। आओ मेरे लाडले बच्चों, मैं आपके लिए ही तो इस धरा, कलियुगी संसार को सतयुगी संसार बनाने के लिए अवतरित हुआ हूँ। पूरे विश्व के 140 देशों में लगभग 8000 सेवाकेन्द्र, उसमें पच्चीस हज़ार से भी अधिक समर्पित भाई एवं बहनें अपनी सेवाएं जनहित के कार्य के लिए दे रहे हैं। एक चरणबद्ध तरीके से परिवर्तन हेतु निरंतर राजयोग का अभ्यास और उससे सम्बंधित बातें सीखने से हम अपने जीवन में आमूलचूल परिवर्तन कर सकते हैं। तो आओ इस दिशा में अपना पहला कदम तो बढ़ायें... !

परमात्मा को जानें इस तरह...

जैसे एक जौहरी के पास परखने की कसौटी होती है जिस पर वो कसकर देखता है कि ये सोना कितने कैरेट का है। उसी प्रकार हम भी अपनी मान्यताओं को कसौटी पर कस करके तो देखें क्योंकि कल अगर सचमुच मेरे सामने भगवान आ भी जायें तो क्या उनको हम पहचान पायेंगे! यह कसौटी निम्न पाँच बातों पर निर्भर करती है...

1 सबसे पहली बात कि जो सर्वधर्म मान्य हो

जिसको सभी धर्मवाले परमात्मा के रूप में स्वीकार करें उसको ही हम सत्य कहेंगे। ऐसा नहीं कि हिन्दुओं का भगवान अलग है, मुसलमानों व क्रिश्चियनों का भगवान अलग है,नहीं। भगवान एक ही है, और वो सर्व का पिता है। दस बातें हमारे सामने हों और हम कहें कि दसों ही सत्य हैं, ऐसा नहीं हो सकता। यदि दो बातें भी हमारे सामने हों तो भी हम कहते हैं- यह सच है, यह झूठ है। तो परमात्मा के विषय में भी सत्य एक ही होना चाहिए, चाहे नाम भिन्न-भिन्न हों।

2 जो सर्वोच्च हो, जिसके ऊपर कोई न हो

जो सर्व का माता-पिता, बंधु, सखा, गुरु, शिक्षक व रक्षक हो। जिसका कोई माता-पिता न हो,

जिसका कोई गुरु न हो, जिसका कोई शिक्षक न हो, जिसकी रक्षा करने वाला कोई न हो, उसको कहेंगे परमात्मा।

3 जो सर्व से परे हो

तभी तो परमात्मा को अजन्मा कहा जाता है। अजन्मा के साथ-साथ उसने गीता में यह भी कहा है कि मैं कालों का भी काल अर्थात् महाकाल हूँ। मुझे काल कभी खा नहीं सकता। जिसका जन्म होता है उसे कर्म भी करना पड़ता है और उसको कर्म का फल भी भोगना पड़ता है। जो कर्म और कर्मफल के चक्र में आ जाता है उसे हम परमात्मा नहीं कहेंगे, क्योंकि उसने स्वयं कहा है कि मैं अकर्ता तथा अभोक्ता हूँ, न करता हूँ न भोगता हूँ।

4 जो परे होते हुए भी सब कुछ जानता हो अर्थात् सर्वज्ञ हो

इसी कारण से परमात्मा को 'त्रिकालदर्शी' कहा जाता है। जिसके पास तीनों कालों व तीनों लोकों का ज्ञान हो, जो त्रिनेत्री है तथा जो मनुष्यों को भी ज्ञान का दिव्यचक्षु प्रदान करने वाले हैं, उसे हम 'परमात्मा' कहेंगे।

5 जो सर्व गुणों में अनंत हो

जिसकी महिमा के लिए कहा हुआ है कि यदि धरती को कागज़ बना दो, सागर को स्याही बना दो, जंगल को कलम बना दो, और स्वयं सरस्वती बैठकर परमात्मा की महिमा लिखे तो भी उसकी महिमा लिखी नहीं जा सकती है।

तो यह है परमात्मा के वास्तविक स्वरूप को परखने की कसौटी। जिस कसौटी पर हमें अपनी मान्यताओं को भी कस कर देखना है कि क्या वह सत्य है!

कुछ इनके भी नज़रिये परमात्मा के बारे में...

संस्थान् सकारात्मक ऊर्जा का केन्द्र

ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में जाने पर शक्ति मिलती है, ताकत मिलती है। यहां आने पर पॉवरफुल वायब्रेशन्स मिलते हैं। जीवन में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है।

ये ब्रह्माकुमारी बहनें साक्षात् ज्ञान गंगाएं हैं। जिनके सानिध्य में आने पर कोई भी अपने आप को हल्का व शक्तिशाली महसूस करता है। उनके पवित्र और सादगी भरे जीवन से सभी को प्रेरणा मिलती है। जैसे सूर्य चमकता है और अपनी रोशनी से चारों ओर प्रकाश बिखेरता है, वैसे ही ये बहनें अपने ज्ञान का प्रकाश बिखेरकर हमारे जीवन में नई रोशनी जगाती हैं। ये बहनें, भगवान के बच्चे पूरे विश्व को ज्ञान की रोशनी दे रहे हैं। - **भारत की महामहिम राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू**

भारत को विश्व गुरू बनाने में संस्थान की अहम् भूमिका

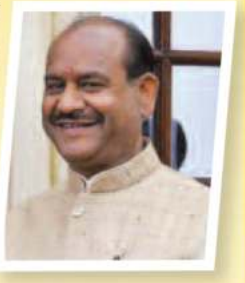

आज के परिदृश्य में भारत ही है जो सम्पूर्ण विश्व में शांति, सद्भाव व समृद्धि का संदेश दे रहा है। सदियों से भारत विश्व में अध्यात्म की गंगा बहा रहा है। भारत विश्वगुरू था और फिर से बनने जा रहा है। इसमें ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान की अहम् भूमिका रहेगी। क्योंकि ये संस्थान न केवल भारत बल्कि पूरे विश्व में अध्यात्म की अलख जगा रहा है। - **लोकसभा स्पीकर ओम बिरला,भारत**

परमात्म कार्य का प्रत्यक्ष प्रमाण इस संस्थान में

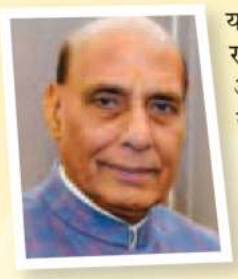

यहां आते ही मेरा अनुभव ये रहा कि मुझे एक सशक्त आध्यात्मिक फीलिंग हुई। यहां का प्रकम्पन मुझे शांति प्रदान कर रहा था। जीवन में बड़ा काम करने के लिए बड़ा दिल होना ज़रूरी है। छोटे दिल का व्यक्ति बड़ा काम नहीं कर सकता। और जिसका दिल जितना बड़ा होगा, वह उतना ही आध्यात्मिक होगा। ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान में दिल व मन को बड़ा करने की शिक्षा दी जाती है। इसी कारण इन्होंने आज विश्व के 140 देशों में भारत की आध्यात्मिकता को पहुंचाया है। मैं ये मानता हूँ कि जो काम सरकार नहीं कर सकती, वो ये ब्रह्माकुमारीज़ संस्थान बखूबी कर रहा है। - **भारत के रक्षामंत्री राजनाथ सिंह**

विश्व परिवर्तन का माध्यम बन रही 'ब्रह्माकुमारीज़'

सभी को जीवन जीने की कला परमात्मा स्वयं इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से देते हैं। इसीलिए इसे गॉडली यूनिवर्सिटी कहा जाता है। जब मैं परमात्मा से मिला तो मेरे सारे व्यर्थ संकल्प समाप्त हो गए और पॉज़िटिव संकल्पों की रचना होने लगी। मेरे शरीर में ऊर्जा का सतत् प्रवाह होने लगा और ऐसा अनुभव हुआ कि इसके अलावा दुनिया में सब कुछ सारहीन है। इस ज्ञान के द्वारा जो हमें एकाग्रता की शक्ति मिली है उसके द्वारा हमें दो पार्टियों के बीच मतभेद को सॉल्व करने में बहुत मदद मिलती थी। इस दुनिया का परिवर्तन इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के माध्यम से ही संभव है। - **बी.डी. राठी,पूर्व हाई कोर्ट जज,ग्वालियर**